कि.म.क. पटेल
दिनांक - 29.05.20
पत्र - (1)

(सेवासदन) सदन का चरित्र - चित्रण

आपकी प्रीति पवित्र प्रेम थी। वह इन इच्छाओं से रहित है।

सदन का विवाह पक्का हो जाता है और उसे गाँव बुला लिया जाता है। इसके बाद सदन का अधूरा विवाह होता है। पिता द्वारा मान-मर्यादा की रक्षा के लिए उसके विवाह की रस्में पूरी नहीं हो पातीं। पुनः सुमन की प्रेरणा से वह शांता के साथ विवाह की रस्में पूरी करता है। किन्तु सुमन की ओर दृष्टि उठा कर नहीं देखता।

सदन के भाव-विचारों से ज्ञात होता है कि वह अपनी मानसिक भावना की अन्तर्द्वन्द्व अवस्था में कभी तो सुमन की बहन की परछाई से भागता है और कभी सुमन के पैरों में पड़कर अपने अपराध की क्षमा करवा लेना चाहता है। सेवासदन उपन्यास में

भारतीय जीव
LIFE INSURANCE CO
Scanned with CamScanner

पेज -(२)

सुमन सबसे अधिक अन्तर्द्वन्द्व से ग्रसित पात्र है।

शांता के विधवाश्रम में आ जाने से सुमन की विचारधारा में परिवर्तन आता है। सुमन ने सोच लिया था कि वह सदन से न बोलेगी, किन्तु बिना बोले शांता की समस्या सुलझती दिखाई नहीं देती थी। इस कारण जब सदन उसे दिखाई देता है तो वह उससे स्पष्ट स्वर से कहती है - 'क्या तुम्हें एक अबला बालिका का जीवन नष्ट करते हुए तनिक भी दया न आयी।' सुमन की इस बात का सदन कोई उत्तर नहीं दे पाता है परन्तु सुमन के प्रबोध करने पर सदन में एक आश्चर्यजनक परिवर्तन होता है अपने प्रति शांता की निवठा

की निष्ठा देखकर उसमें प्रेमाभिलाषा ही नहीं जागती बल्कि उसमें कर्मठता भी जाग जाती है। उसे कर्तव्य का बोध होता है। वह ज्ञाता के प्रति अपने दायित्व को समझने लगता है।

उसके मन में यह बात आती है कि उसकी निर्बलता का कारण है उसकी अकर्मण्यता और बेकारी। वह साहसपूर्वक कोई काम इसलिए नहीं कर पाता कि वह अपने चाचा और पिता के ऊपर निर्भर रहता है।

आगे हम सदन का घोर परिश्रमी, स्वावलम्बी और आत्म-निर्भर देखते हैं। उसमें अनेक गुण थे। "वह ईमानदार था, स्पष्टवक्ता था, सरल था, जो मुँह पर कहता था।" सदन नदी में नाव चलाने का व्यापार करने

Scanned with CamScanner

लगता है। यहाँ वह आजकल के फैशन-परस्त नवयुवकों के लिए आदर्श रूप में हमारे सामने आता है। वह जमींदार का पुत्र था और एक वकील का भतीजा। उस उच्च पद से उतर कर मल्लाह का काम करने में उसे स्वभावतः लज्जा आती थी।" परन्तु वह उसी काम को करता है। सदन दिन-रात परिश्रम करता है, मल्लाह उससे दबते हैं। आर्थिक असफलता की कुंजी तो परिश्रम ही है। सदन को इसी के बल पर सहायता मिली। उसने भगतराम से माल ढोने का ठेका लिया और धीरे-धीरे नून की चक्की खड़ी कर ली। उसके पास जमीन हो गयी और रहने के लिए मकान भी।

आत्मनिर्भर हो जाने से रूप और कर्तव्य-पालन तथा दृढ़ता

जैसे गुण उत्पन्न हो जाते हैं। वह शांता को अपनाने की बात पद्मसिंह से कहता है। वह कहता है — यह मेरे जीवन का परम कर्तव्य है उसे गुप्त रखने की आवश्यकता नहीं है। अब तक विवाह के जो संस्कार पूरे नहीं हुए हैं, वह कल गंगा के किनारे पूरे किये जायेंगे। यदि आप वहाँ आने की कृपा करेंगे तो मैं अपना सौभाग्य समझूँगा। नहीं तो ईश्वर के दरबार में गवाहों के बिना भी प्रतिष्ठा हो जाती है।' साहस का प्रदर्शन करता हुआ वह विवाह की शेष रस्मों को पूरी कर लेता है। मदनसिंह को जब यह समाचार मिलता है तो वे बहुत बिगड़ते हैं और अपनी संपत्ति में से कुछ भी नहीं देना चाहते। पर उसके पुत्र हो जाने के बाद वे आते हैं और पुत्र व पुत्र-वधू और उसके बेटे को अपना लेते हैं।

ATION OF INDIA

इस प्रकार हम देखते हैं कि सदन आरंभ में चाहे कैसा भी उद्दंड और कैशोर्य अवस्था में भटका हुआ रहा हो पर अंत में वह अपना उत्तरदायित्व को समझने लगता है और अपने जीवन की बदली हुई परिस्थितियों को सहर्ष स्वीकार कर लेता है।

हठी, उच्छृंखल, क्रोधी, उद्दंड सदन अन्त में अत्यन्त सरल, कोमल, विनीत, संयमी और उदात्त वृत्ति वाला हो जाता है। इस प्रकार हम कह सकते हैं कि कैशोर्य और यौवन की संधिवेला में भटका हुआ सदन अंततः संभल जाता है।

x x x x